Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue 1- 2016

पर्यटन के क्षेत्र में भाषागत संसाधन

डॉ. विदुषी आमेटा*

शोध सार (Abstract)

पर्यटन का भाषा के साथ अनन्योनाश्रित संबंध है। भाषा की सहजता और बोधगम्यता में अभिवृद्धि पर्यटन विकास में महती भूमिका निभा सकती है। यह आलेख पर्यटन के क्षेत्र में भाषा की स्थिति, उपयोगिता, प्रभाव, रोजगार और भाषिक सुविधा संसाधनों का युक्तायुक्त विवेचन करने का विनम्र प्रयास है।

कुंजीशब्दः पर्यटन, भाषा।

भाषा, पर्यटन और संस्कृति

मनुष्य के विचार एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा कहलाती है। प्रत्येक राष्ट्र, क्षेत्र और समुदाय की अपनी भाषा होती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करता है। भाषा किसी क्षेत्र विशेष की संस्कृति का अंग है, जिसके द्वारा संस्कृति अभिव्यक्ति पाती है। पर्यटन जब संस्कृति को जानने, समझने और आनंद उठाने का माध्यम है तो भाषा और पर्यटन दोनों स्वतः संबंधित हो जाते हैं। कह सकते हैं कि जहाँ संस्कृति की व्यक्ति स्तर पर अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है तो पर्यटन इसे वृहत स्तर पर अभिव्यक्त करता है। भाषा द्वारा अभिव्यक्त संस्कृति व्यक्ति को प्रभावित करती है और पर्यटन द्वारा संपूर्ण वसुधा को।

पर्यटकों के समक्ष भाषायी प्रश्न

जब कोई पर्यटक किसी सुदूर क्षेत्र की यात्रा करता है तो उसके समक्ष भाषा सबसे बड़ी समस्या और आश्चर्य के रूप में खड़ी रहती है। पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) भाषा की समस्या का आसान समाधान है। पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) के लिए आवश्यक है कि वह बहुभाषाविद हो और उसकी भाषा में माधुर्य, आकर्षण, ओज, प्रवाह व स्पष्टता विद्यमान हो। पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) को पर्यटक की भाषा और पर्यटन क्षेत्र की भाषा दोनों का ज्ञान होना चाहिए। पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) पर्यटकों को ऐसे स्थानों से भी परिचित करा सकता है, जो सामान्यतया कम प्रसिद्ध होने के कारण अछूते रह जाते हैं।[1]

पर्यटक निर्देशन साहित्य भी पर्यटकों के लिए एक अच्छा माध्यम है। कई स्थानों पर छपे हुए कार्ड, परिचय पुस्तिकाएं आदि उपलब्ध कराए जाते हैं। यह निःशुल्क अथवा बहुत ही कम दर पर प्राप्त किए जा सकते हैं। भारत में अधिकांशतया यह साहित्य क्षेत्रीय भाषा के साथ हिन्दी और अंग्रेजी में ही उपलब्ध रहते हैं। इन्हें विविध भाषाओं में प्रकाशित किया जाना चाहिए।

*विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाडा, राजस्थान।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

एक मे ही सभी भाषाओ का समावेश करना या अलग–अलग भाषाओं मे अलग–अलग प्रकाशन इसके दो विकल्प हैं। पहला विकल्प दूसरे विकल्प की अपेक्षा पर्यटकों के लिए आर्थिक दृष्टि से अधिक वजनी रहेगा। साथ ही संभालने में भी वजनी होगा। अतः दूसका विकल्प आर्थिक दृष्टि व संभालने की दृष्टि दोनों ही स्तरों पर सुविधादायी है। पर्यटक अपनी भाषा का चयन कर इसे खरीद सकता है। यह साहित्य पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) की सेवाएं क्रय करने की अपेक्षा सस्ता साधन है और इसे भविष्य में उपयोग के लिए सुरक्षित भी रखा जा सकता है।

स्थान–स्थान पर द्वि अथवा त्रि भाषी सूचना पट्ट (नोटिस बोर्ड) लगाने का भी अपना महत्त्व है। ये सूचना पट्ट जहाँ स्थान, मार्ग आदि का निर्देश करते हैं, वहीं वस्तु, स्थान, प्रदर्शित सामग्री आदि का परिचय और विवरण भी उपलब्ध कराते हैं।

वर्तमान इण्टरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में प्रत्येक क्षेत्र विशेष की समस्त जानकारी सभी भाषाओं में इण्टरनेट पर उपलब्ध कराई जा सकती है। अधिकाश देशों और भारत के कई राज्यों में पर्यटन विभागों द्वारा अपनी वेबसाइट बना रखी है। इनमें क्षेत्र विशेष की भाषा या अंग्रेजी और हिन्दी (मात्र भारतीय राज्यों के पर्यटन विभागों की वेबसाइट में) भाषा का प्रयोग है।

इसके स्थान पर सभी प्रचलित भाषाओं की उपस्थिति और भाषा चयन की सुविधा पर्यटकों के आकर्षण का कारण बनेगी। पर्यटक अपनी पसंदीदा भाषा का चुनाव कर पहले से ही किसी क्षेत्र विशेष की विशेषताएं, रहन–सहन, जीवन शैली, प्रमुख दर्शनीय स्थल, क्षेत्र विशेष का इतिहास और वर्तमान का परिचय प्राप्त कर सकता है।

ब्रिटिश सरकार आई ई एल टी एस तथा टी ओ ई एफ एल (टॉफेल) जैसे पाठ्यक्रमों द्वारा श्रेष्ठ भाषाविद तैयार करती है। ये ब्रिटिश अंग्रेजी सिखने के पाठ्यक्रम हैं जिसमें, प्रशिक्षण के पश्चात दो से तीन चरणों में लिखित, मौखिक एवं बोधगम्यता की कठिन परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। इसमें उत्तीर्ण व्यक्ति ब्रिटिश अंग्रेजी का अच्छा जानकार हो जाता है। वह पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड), व्यापारी, अनुवादक, होटल प्रबंधक, वेटर की भूमिकाओं में कार्य कर सकता है। यातायात, रिसोर्ट, ट्रेवल एजेंसियाँ, टूर कंपनी का क्षेत्र भी इनके लिए खुला है।[2]

स्पेन में प्रत्येक पाठ्यक्रम के अंग के रूप में सप्ताहांत में एक यात्रा अनिवार्य होती है। इस दौरान यात्रियों को स्पेनिश भाषा से भी परिचित कराया जाता है। भाषा व संस्कृति के प्रचार–प्रसार का यह आसान व श्रेष्ठ तरीका है।[3]

भाषा एप

राजस्थान के बाड़मेर जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया 12 भाषाओं का एप नवीन शुरुआत है। सोहनसा सिस्टम्स प्राईवेट लिमिटेड की ओर से तैयार इस एप का क्रियान्वयन केयर्न इण्डिया और पर्यटन विभाग के सहयोग से किया जा रहा है। इसमें पर्यटन स्थल के पौराणिक परिचय व इतिहास से लेकर वर्तमान व्यवस्थाओ की समस्त जानकारी है।

इससे पर्यटन स्थल के अलावा होटल, रेस्त्रा, मनी एक्सचेंज सेंटर, शौचालय, पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड), कॉफी हाउस, बाजार, पुलिस स्टेशन सहित अन्य जानकारी मिल सकेगी। राजस्थान की सीमा में प्रवेश करते ही पर्यटक को मुख्यमंत्री का स्वागत संदेश (वेलकम मेसेज) मिलता है।

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

कोई भी व्यक्ति अपने एंड्रायड मोबाईल के गूगल प्ले स्टोर से इस लेजगो एप को निःशुल्क डाऊनलोड कर सकता है। इसके तहत जिले के 15 महत्त्वपूर्ण स्थलों पर आईओटी (इण्टरनेट ऑफ थिंग्स) डिवाइस लगाये गये हैं। बाडमेर जिले के किराडू, जूनापतरासर, पीरातरा, नींबड़ी माता मंदिर, जसदेर धाम, जगदम्बा गढ़ मंदिर, केयर्न एण्टरप्राइजेज सेंटर, देवका सूर्य मंदिर, खेड मंदिर, राणी भटियाणी मंदिर, नाकोडा, सिवाना किले समेत 15 स्थानों पर इसे स्थापित किया गया है।

डिवाइस की 100 मीटर की रेंज में पहुँचने पर पर्यटक को अपने मोबाईल पर एक सूचना (नोटिफिकेशन) मिलेगा और इसे क्लिक करने पर हर जानकारी मोबाईल स्क्रीन पर होगी। इस एप में 12 भाषाओं में अनुवाद की सुविधा है। यह अनुवाद लिखित तो होगा ही साथ ही इसको सुना भी जा सकता है।[4]

गूगल द्वारा अनुवाद (गूगल ट्रांसलेशन) की सेवाएं भी इस क्षेत्र में सराहनीय भूमिका निभा सकती है। इसमें बोले गये शब्दों (स्पोकन वर्ड्स) का चाही गयी भाषा में लिखित अनुवादित रूप्यांतरण उपलब्ध हो जाता है।

देशी–विदेशी सैलानियों के लिए इस प्रकार की सहज भाषायी सुविधाओं का विकास अनिवार्य है। भाषा ज्ञान के अभाव में कई बार विकट संकट भी उपस्थित हो सकता है। पर्यटक से अपेक्षा रखना कि वह भाषा का ज्ञान रखे यह उचित नहीं है। पर्यटन स्थल पर मेजबानी कर रहे व्यक्ति में भाषा ज्ञान का अभाव होने पर वह पर्यटक के विचार नहीं जान पाएगा। असंवाद की स्थिति में पर्यटक के समक्ष कई प्रकार के संकट उपस्थित हो जाते हैं जिनकी परिणिति पर्यटकों की कमी के रूप में भी हो सकती है।

पर्यटन एवं भाषा क्षेत्र के रोजगार

पर्यटन की आड़ में भाषा के आधार पर कुछ रोजगार भी विकसित हो रहे हैं, यथा–

1. पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) का समस्त कार्य भाषा व्यवहार व भाषा ज्ञान पर आधारित है।
2. पर्यटक निर्देशन साहित्य व वेबसाईट के निर्माण में अनुवादकों की सहभागिता आवश्यक है।
3. पर्यटन क्षेत्रों पर स्थित होटल, रेस्त्रां, दुकानों व अन्य सुविधाओं में लगे कार्मिकों के लिए बहुभाषायी दक्षता अधिक उपयोगी है।
4. विदेशी भाषाओं को सिखाने के लिए शिक्षण संस्थाओं का गठन किया जा सकता है।
5. भाषा दक्षता हासिल कर प्रशिक्षक के रूप में पर्यटक निर्देशक (ट्यूरिस्ट गाइड) तैयार करने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर या संस्थागत स्तर पर कार्य किया जा सकता है।
6. कई बार विदेशी पर्यटक पर्यटन क्षेत्र की भाषा विशेष को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। उनके लिए 2–3 दिन अथवा 15–30 दिन के भाषा ज्ञान के लघु पाठ्यक्रम चलाना आय का अच्छा स्रोत हो सकता है।
7. पर्यटन मंत्रालय द्वारा जारी भर्ती विज्ञापनों में अनिवार्य योग्यता के रूप में द्विभाषी या बहुभाषी ज्ञान की माँग की जाती है।

स्पष्टतः पर्यटन के क्षेत्र में भाषा तत्व एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। व्यक्तिगत स्तर से लेकर सामूहिक स्तर और मनुष्य से लेकर भौतिक और यांत्रिक स्तर पर भाषा का अक्षुण्ण महत्त्व है। भाषा को सहज बोधगम्य माध्यम से पर्यटकों के समक्ष उपस्थित करने पर पर्यटकों की

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

संख्या में वृद्धि की जा सकती है एवं पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सकता है। सरदार पूर्णसिंह अपने निबंध में लिखते हैं– "आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सबके सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान है। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यान का प्रभाव चिरस्थायी होता है। मौनरूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बलवती, इतनी अर्थवती और इतनी प्रभाववती है कि उसके सामने क्या मातृभाषा क्या साहित्यभाषा और क्या अन्य देश की भाषा–सब की सब तुच्छ प्रतीत होती है।" पर्यटन के विकास के लिए आचरण की सभ्यता की यह मौन भाषा, अर्थात मानवता सर्वाधिक महती आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. शिव स्वरूप सहाय, पर्यटनः सिद्धांत और प्रबंधन (ई–बुक)।
[2]. www.academiccourses.in.
[3]. https://www.enfox.com.
[4]. News.raftaar.in- www.dainiknavjyoti.net, may 01, 2017.
[5]. सरदार पूर्णसिंह, आचरण की सभ्यता, निबंध चयनिका, पुनीत प्रकाशन, जयपुर, 2014.

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.